11.19 hrs

DISCUSSION ON 'PARLIAMENTARY JOURNEY OF 75 YEARS STARTING FROM SAMVIDHAN SABHA – ACHIEVEMENTS, EXPERIENCES, MEMORIES AND LEARNINGS'

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): माननीय अध्यक्ष जी, देश की 75 वर्षों की संसदीय यात्रा, उसका एक बार पुन: स्मरण करने के लिए और नए सदन में जाने से पहले उन प्रेरक पलों को, इतिहास की महत्वपूर्ण घड़ी को स्मरण करते हुए आगे बढ़ने का यह अवसर है। हम सब इस ऐतिहासिक भवन से विदा ले रहे हैं।

आजादी के पहले यह सदन इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल का स्थान हुआ करता था। आजादी के बाद इसको संसद भवन के रूप में पहचान मिली। यह सही है कि इस इमारत के निर्माण करने का निर्णय विदेशी शासकों का था, लेकिन यह बात हम कभी नहीं भूल सकते हैं और हम गर्व से कह सकते हैं कि इस भवन के निर्माण में पसीना मेरे देशवासियों का लगा था, परिश्रम मेरे देशवासियों का लगा था और पैसे भी मेरे देश के लोगों का लगा था। इस 75 वर्ष की हमारी यात्रा ने अनेक लोकतांत्रिक परंपराओं और प्रक्रियाओं का उत्तम से उत्तम सृजन किया है और इस सदन में रहे हुए सबने उसमें सक्रियता से योगदान भी दिया है और साक्षी भाव से उसको देखा भी है। हम भले नए भवन में जाएंगे, लेकिन पुराना भवन भी, यह भवन भी आने वाली पीढ़ियों को हमेशा-हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। यह भारत के लोकतंत्र की स्वर्णिम यात्रा का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जो सारी दुनिया को भारत की रगों में लोकतंत्र का सामर्थ्य कैसे है, इसका परिचय कराने का काम इस इमारत से होता रहेगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, अमृतकाल की प्रथम प्रभा का प्रकाश, राष्ट्र में एक नया विश्वास, नया आत्मविश्वास, नई उमंग, नए सपने, नए संकल्प और राष्ट्र का नया सामर्थ्य उसे भर रहा है। चारों तरफ आज भारतवासियों की उपलब्धि की चर्चा हो रही है और गौरव के साथ हो रही है। यह हमारे

75 साल के संसदीय इतिहास का एक सामूहिक प्रयास का परिणाम है, जिसके कारण विश्व में आज वह गूंज सुनाई दे रही है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, चंद्रयान-3 की सफलता से न सिर्फ पूरा भारत, पूरा देश अभिभूत है, बल्कि इसमें भारत के सामर्थ्य का एक नया रूप, जो आधुनिकता से जुड़ा है, जो विज्ञान से जुड़ा है, जो टेक्नोलॉजी से जुड़ा है, जो हमारे वैज्ञानिकों के सामर्थ्य से जुड़ा है, जो 140 करोड़ देशवासियों की संकल्प शक्ति से जुड़ा हुआ है, वह देश और दुनिया पर नया प्रभाव पैदा करने वाला है। यह सदन और इस सदन के माध्यम से मैं फिर एक बार देश के वैज्ञानिकों और उनके साथियों को कोटि-कोटि बधाइयां देता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस सदन ने भूतकाल में जब नेम (NAM) की समिट हुई थी, सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करके देश के इस प्रयास को सराहा था। आज जी-20 की सफलता को भी आपने सर्वसम्मति से सराहा है। मैं मानता हूं कि देशवासियों का आपने गौरव बढ़ाया है। मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। जी-20 की सफलता 140 करोड़ देशवासियों की है। यह भारत की सफलता है। किसी व्यक्ति की सफलता नहीं है, किसी दल की सफलता नहीं है। भारत के फेडरल स्ट्रक्चर ने, भारत की विविधता ने 60 स्थानों पर 200 से अधिक समिट और उसकी मेजबानी हिन्दुस्तान के अलग-अलग रंग-रूप में, देश की अलग-अलग सरकारों ने बड़े आन-बान-शान से की और यह प्रभाव पूरे विश्व भर के मन पर पड़ा हुआ है। यह हम सब के लिए सेलिब्रेट करने वाला विषय है, देश के गौरव गान को बढ़ाने वाला है और जैसा आपने उल्लेख किया कि भारत इस बात के लिए गर्व करेगा, जब भारत अध्यक्ष रहा था, उस समय अफ्रीकन यूनियन इसका सदस्य बना है। मैं उस इमोशनल पल को भूल नहीं सकता हूं कि जब अफ्रीकन यूनियन की घोषणा हुई और अफ्रीकन यूनियन के प्रेजीडेंट ने इंटरव्यू में कहा कि मेरे जीवन में यह ऐसा पल था कि शायद मैं बोलते-बोलते रो पड़ूंगा। आप कल्पना कर सकते हैं कि कितनी बड़ी अपेक्षा और आशाएं पूरा करने का काम भारत के भाग्य में आया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, भारत के प्रति शक करने का एक स्वभाव कई लोगों का बना हुआ है और जब आज़ादी मिली, तब से चल रहा है। इस बार भी यही था कि कोई डिक्लेरेशन नहीं होगा, असम्भव है। लेकिन यह भारत की ताकत है कि वह भी हुआ और विश्व सर्वसम्मति से एक साझा घोषणा पत्र लेकर, आगे का रोड मैप लेकर यहां से प्रारंभ हुआ है। अध्यक्ष जी, आपके नेतृत्व में, क्योंकि भारत की अध्यक्षता नवंबर के आखिरी दिन तक है, इसलिए अभी हमारे पास जो समय है, उसका उपयोग हम करने वाले हैं और आपकी अध्यक्षता में दुनिया भर के जो जी-20 के सदस्य हैं, पी-20 पार्लियामेंट के स्पीकर्स की एक समिट की जैसे आपने घोषणा की, सरकार का आपके इस प्रयास को पूरा समर्थन रहेगा, पूरा सहयोग रहेगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम सब के लिए गर्व की बात है कि आज भारत विश्व मित्र के रूप में अपनी जगह बना पाया है। पूरा विश्व भारत में अपना मित्र खोज रहा है। पूरा विश्व भारत की मित्रता को अनुभव कर रहा है और उसका मूल कारण है कि हमारे जो संस्कार हैं, वेद से विवेकानंद तक जो हमने पाया है, 'सबका साथ, सबका विकास' का मंत्र आज विश्व को हमें साथ लाने में जोड़ रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस सदन से विदाई लेना एक बहुत ही भावुक पल है। परिवार भी अगर पुराना घर छोड़कर नए घर जाता है तो बहुत सारी यादें कुछ पल के लिए उसको झकझोर देती हैं और हम जब यह सदन को छोड़ कर जा रहे हैं तो हमारा मन-मस्तिष्क भी उन भावनाओं से भरा हुआ है, अनेक यादों से भरा हुआ है। खट्टे-मीठे अनुभव भी रहे हैं, नोंक-झोंक भी रही है, कभी संघर्ष का माहौल भी रहा है और कभी इसी सदन में उत्सव और उमंग का माहौल भी रहा है। ये सारी स्मृतियाँ हमारे साथ हैं। ये हम सबकी साझी स्मृतियाँ हैं, ये हम सबकी साझी विरासत है। इसलिए इसका गौरव भी हम सबका साझा है।

आज़ाद भारत के नव-निर्माण से जुड़ी हुई अनेक घटनाएँ इन 75 वर्षों में हमने यहीं इस सदन में आकार लेती हुई देखी हैं। आज हम लोग जब इस सदन को छोड़कर नये सदन की ओर प्रस्थान करने वाले हैं, तब भारत के सामान्य मानवी की भावनाओं को जहाँ जो आदर मिला है, सम्मान मिला है, यह उसकी अभिव्यक्ति का भी अवसर है।

जब मैं पहली बार संसद का सदस्य बना और पहली बार एक सांसद के रूप में इस भवन में मैंने प्रवेश किया तो सहज रूप से मैंने इस संसद भवन के डोर, पगथी पर अपना शीश झुकाकर, इस लोकतंत्र के मन्दिर को श्रद्धाभाव से नमन करते हुए, मैंने पैर रखा था। वह पल मेरे लिए भावनाओं से भरी हुई थी। मैं कल्पना नहीं कर सकता था, लेकिन यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है, भारत के सामान्य मानवी की लोकतंत्र के प्रति श्रद्धा का प्रतिबिम्ब है कि रेलवे प्लेटफॉर्म पर गुजारा करने वाला एक गरीब परिवार का बच्चा पार्लियामेंट पहुँच जाता है। मैंने कभी कल्पना तक नहीं की थी कि देश मुझे इतना सम्मान देगा, इतना आशीर्वाद देगा, इतना प्यार देगा। यह मैंने सोचा नहीं था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम में से बहुत लोग हैं, जो संसद भवन के अन्दर जो चीजें लिखी गई हैं, उनको पढ़ते भी रहते हैं। लोग कभी-कभी उसका उल्लेख भी करते हैं। हमारे यहाँ संसद भवन के प्रवेश द्वार पर छांदोग्य उपनिषद का एक वाक्य लिखा है। "लोकद्वारम" करके वह पूरा वाक्य है। उसका मतलब यह होता है कि जनता के लिए दरवाजे खोलिए और देखिए कि कैसे वह अपने अधिकारों को प्राप्त करती है। हमारे ऋषि-मुनियों ने यह लिखा है। यह इसके प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है।

हम सब और हमारे पहले जो लोग यहाँ रहे हैं, वे भी इस सत्यता के साक्षी हैं। आदरणीय अध्यक्ष जी, समय रहते जैसे-जैसे वक्त बदलता गया, हमारे सदन की संरचना भी निरंतर बदलती रही है। यह और अधिक समावेशी बनती गई है। समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधि, विविधताओं से भरा हुआ इस सदन में नज़र आता है। अनेक भाषाएँ हैं, अनेक बोलियाँ हैं, अनेक पहरवेश हैं, अनेक खानपान हैं। सदन के अन्दर सबकुछ है। समाज के सभी तबके के लोग, चाहे वे सामाजिक रचना के हों, चाहे आर्थिक रचना के हों, चाहे गाँव या शहर के हों, एक प्रकार से पूर्ण रूप से समावेशी वातावरण सदन में पूरी ताकत के साथ जन-सामान्य की इच्छा-आकांक्षाओं को प्रकट करता रहा है। दलित हो, पीड़ित हो, आदिवासी हो, पिछड़ा वर्ग हो, महिलाएं हों, हर एक का धीरे-धीरे योगदान बढ़ता चला गया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, प्रारंभ में महिला सदस्यों की संख्या कम थी, लेकिन धीरे-धीरे माताओं-बहनों ने भी इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है। ... (व्यवधान) इस सदन की गरिमा में बहुत बड़ा बदलाव लाने में उनका योगदान रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, प्रारंभ से अब तक, एक मोटा-मोटा हिसाब लगाता था, करीब-करीब 7,500 से अधिक जनप्रतिनिधि, दोनों सदनों में मिलाकर, योगदान दे चुके हैं इतने सालों में। ... (व्यवधान) ये 7,500 से भी ज्यादा हैं। इस कालखंड में करीब 600 महिला सांसदों ने भी इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है। ... (व्यवधान) दोनों सदनों की गरिमा को बढ़ाया है। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, आप जानते हैं कि इस सदन में आदरणीय इन्द्रजीत गुप्ता जी 43 वर्षों तक, अगर मैं गलत नहीं हूं, तो 43 वर्षों के लंबे समय तक इस सदन में बैठकर इस सदन का साक्षी बनने का उनको सौभाग्य मिला था। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, यही सदन है, जहां डॉ. शफीकुर्रहमान जी, 93 वर्ष की एज में भी सदन में अपना योगदान देते रहे हैं। उनकी उम्र 93 इयर्स है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है कि 25 साल की उम्र की चन्द्राणी मुर्मु जी इस सदन की सदस्य बनी थीं। ... (व्यवधान) सिर्फ 25 साल की उम्र की, सबसे छोटी उम्र की सदस्य बनी थीं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, वाद-विवाद, कटाक्ष, यह सब कुछ हम सबने अनुभव किया है। हम सबने इनीशिएट भी किया है, कोई बाकी नहीं है। लेकिन उसके बावजूद भी शायद जो परिवार भाव हम लोगों के बीच में रहा है, हमारी पहले की पीढ़ियों में भी रहा है। जो लोग प्रचार माध्यमों से हमारा यहां का रूप देखते हैं और बाहर निकलते ही हमारा जो अपनापन होता है, परिवार भाव होता है, वह एक अलग ही ऊंचाई पर ले जाता है। ... (व्यवधान) यह भी इस सदन की ताकत है।

इसके साथ-साथ हम कभी कड़वाहट पालकर नहीं जाते हैं। हम उसी प्यार से, सदन छोड़ने के कई वर्षों के बाद भी मिल जाएं, तो भी उस प्यार को कभी भूलते नहीं हैं। उन स्नेह भरे दिनों को भूलते नहीं हैं। वह मैं अनुभव कर सकता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हमने पहले भी और वर्तमान में भी, कई बार देखा है कि अनेक संकटों के बावजूद भी, अनेक असुविधाओं के बावजूद भी सांसद सदन में आए हैं और उन्होंने शारीरिक पीड़ा भी सही हो, तो भी सदन में एक सांसद के रूप में, जनप्रतिनिधि के रूप में अपना कर्तव्य निभाया है। ऐसी अनेक घटनाएं आज हमारे सामने हैं। गंभीर-गंभीर बीमारियों के बावजूद भी किसी को व्हीलचेयर में आना पड़ा, किसी को डॉक्टरों को बाहर खड़े रखकर अंदर आना पड़ता था, लेकिन सभी सांसदों ने कभी न कभी इस प्रकार से अपनी भूमिका निभाई है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कोरोना काल हमारे सामने उदाहरण है। हर परिवार में डर रहता था कि कहीं बाहर जाएं, तो कहीं मौत को बुलावा न दे दें। उसके बावजूद भी हमारे माननीय सांसद दोनों सदनों में कोरोना काल की संकट की घड़ी में भी सदन में आए और अपना कर्तव्य निभाया। ... (व्यवधान) हमने राष्ट्र का काम रुकने नहीं दिया। आवश्यकता पड़ती थी, डिस्टेंस भी रखना था और बार-बार टेस्टिंग भी करानी पड़ती थी। सदन में आते थे, लेकिन मास्क पहनना पड़ता था। बैठने की रचना भी अलग-अलग की गई, समय भी बदले गए। हर चीज के साथ, राष्ट्र का काम रूकना नहीं चाहिए, इस भाव से सभी सदस्यों ने इस सदन को अपने कर्तव्य का महत्वपूर्ण अंग माना है और संसद को चलाये रखा है। मैंने देखा है कि इस सदन से इतना लगाव लोगों का रहता है, पहले कभी हम देखते थे, कोई 30 साल पहले सांसद रहा होगा, कोई 35 साल पहले रहा होगा, लेकिन वह सेन्ट्रल हॉल तो जरूर आएगा। जैसे मन्दिर जाने की आदत होती है, वैसे उनको सदन में आने की आदत होती है। इस जगह का लगाव बन जाता है, एक आत्मीय भाव से जुड़ाव हो जाता है। ऐसे बहुत से पुराने लोग हैं, जिनका आते-जाते मन करता है कि जरा चलो एक चक्कर काटते हैं। आज उनका जनप्रतिनिधि के नाते दायित्व नहीं है, लेकिन भूमि के प्रति उनका लगाव हो जाता है। यह सामर्थ्य होता है इस सदन का।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आजादी के बाद बहुत बड़े-बड़े विद्वान लोगों ने बहुत आशंकायें व्यक्त की थीं। पता नहीं देश का क्या होगा, चल पायेगा कि नहीं चल पायेगा, एक रहेगा या बिखर जायेगा, लोकतन्त्र बना रहेगा या नहीं, लेकिन इस देश की संसद की ताकत है कि पूरे विश्व को गलत

सिद्ध कर दिया और यह राष्ट्र पूरे सामर्थ्य के साथ आगे बढ़ता रहा है। इस विश्वास से कि हम, भले ही आशंकाएं होंगी, घने काले बादल होंगे, लेकिन सफलता प्राप्त करते रहेंगे। हम सब लोगों ने, हमारी पुरानी पीढ़ियों ने मिलकर के इस काम को करके दिखाया है। इसका गौरव गान करने का यह अवसर है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इसी भवन में 2 साल 11 महीने तक संविधान सभा की बैठकें हुई हैं और उसमें देश के लिए एक मार्गदर्शक, जो आज भी हमें चलाता है, हमारा संविधान दिया और 26 नवम्बर, 1949 को जो संविधान हमें मिला, वह 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। इन 75 वर्षों में सबसे बड़ा जो अचीवमेंट है, वह यह है कि देश के सामान्य मानवी का इस संसद पर विश्वास बढ़ता ही गया है और लोकतन्त्र की सबसे बड़ी ताकत यही है कि इस महान संस्था के प्रति, इस महान इंस्टिट्यूशन के प्रति, इस व्यवस्था के प्रति उनका विश्वास अटूट रहे, विश्वास उनका बना रहे। इन 75 वर्षों में हमारी संसद ने इसे जन भावनाओं की अभिव्यक्ति का भवन भी बना दिया है। यहाँ जन भावनाओं की पुरजोश अभिव्यक्ति होती है और हम देखते हैं कि राजेन्द्र बाबू से लेकर डॉ. कलाम, रामनाथ जी कोविंद और अभी द्रौपदी मुर्मू जी, इन सबके सम्बोधन का लाभ हमारे सदनों को मिला है, उनका मार्गदर्शन मिला है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, पंडित नेहरू जी, शास्त्री जी, वहाँ से लेकर के अटल जी, मनमोहन सिंह जी तक एक बहुत बड़ी श्रृंखला है, जिसने इस सदन का नेतृत्व किया है और सदन के माध्यम से देश को दिशा दी है। देश को नए रंग-रूप में ढालने के लिए उन्होंने परिश्रम किया है, पुरूषार्थ किया है। आज उन सबका गौरव गान करने का भी अवसर है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, लोहिया जी, चन्द्रशेखर जी, आडवाणी जी, न जाने अनगिनत नाम हैं, जिन्होंने हमारे इस सदन को समृद्ध करने में, चर्चाओं को समृद्ध करने में, देश के सामान्य से सामान्य व्यक्ति की आवाज को ताकत देने का काम इस सदन में किया है।

विश्व के भी अनेक राष्ट्राध्यक्षों द्वारा हमारे सदनों को संबोधित करने के अवसर आए हैं और उनकी बातों में भी भारत के लोकतंत्र के प्रति आदर का भाव व्यक्त हुआ है। उमंग, उत्साह के पल के

बीच कभी सदन की आंख से आंसू भी बहे और यह सदन दर्द से भर गया, जब देश को अपने तीन प्रधान मंत्रियों को उनके अपने कार्यकाल में खोने की नौबत आई - नेहरू जी, शास्त्री जी, इंदिरा जी, तब यह सदन अश्रुभीनी आंखों से उन्हें विदाई दे रहा था। आदरणीय अध्यक्ष जी, अनेक चुनौतियों के बावजूद भी हर स्पीकर ने, हर सभापति ने बेहतरीन तरीके से दोनों सदनों को सुचारू रूप से चलाया है और अपने कार्यकाल में उन्होंने जो निर्णय किए हैं, वे निर्णय मावलंकर जी के काल से शुरू हुए हों या सुमित्रा जी के कालखंड के हों या बिरला जी के, आज भी उन निर्णयों को रेफरेंस पॉइंट माना जाता है। यह काम हमारे करीब 17 स्पीकर्स और उसमें दो हमारी महिला स्पीकर्स ने भी मावलंकर जी से लेकर सुमित्रा ताई तक और बिरला जी का मार्गदर्शन आज भी हमें मिल रहा है, हर एक की अपनी-अपनी शैली रही है लेकिन उन्होंने सभी को साथ लेकर नियमों, कानूनों के बंधन में इस सदन को हमेशा ऊर्जावान बनाए रखा है। मैं आज उन सभी स्पीकर महोदयों का भी वंदन करता हूं, अभिनंदन करता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह सही है कि हम जनप्रतिनिधि अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं लेकिन सातत्यपूर्ण तरीके से हमारे बीच जो एक टोली बैठती है, उनकी भी कई पीढ़ियां बदल गईं। वे कभी कागज लेकर दौड़ कर आते हैं, उनका भी योगदान कम नहीं है। हमें कागज, पत्र पहुंचाने के लिए दौड़ते हैं। सदन में कोई गलती न हो जाए, उसके निर्णय में कोई गलत न हो जाए, उसके लिए वे चौकन्ने रहते हैं। जो काम उनके द्वारा हुआ है, उसने भी सदन की क्वालिटी ऑफ गवर्नेंस में तेजी लाने में बहुत बड़ी मदद की है। मैं उन सभी साथियों का और इनके पूर्व में जो रहे हैं, उनका भी हृदय से अभिनंदन करता हूं। इतना ही नहीं सदन मतलब यह खंड ही नहीं, इस पूरे परिसर में अनेक लोगों ने किसी ने हमें चाय पिलाई, किसी ने हमें पानी पिलाया, किसी ने रात-रात चली सदन को किसी को भूखे पेट रहने नहीं दिया तथा कई प्रकार की सेवाएं कीं। किसी माली ने इसके बाहर के एनवायरमेंट को संभाला होगा, किसी ने इसकी सफाई की होगी। न जाने कितने ही अनगिनत लोग होंगे, जिन्होंने हम सब अच्छे ढंग से काम कर सकें और यहां जो काम हो वह काम देश को आगे बढ़ाने के लिए, काम

अधिक से अधिक तेजी से हो, उसके लिए जो माहौल बनाना, व्यवस्था बनाना, उसके लिए जिस-जिस ने योगदान दिया, मेरी तरफ से भी और सदन की तरफ से भी मैं उनका विशेष रूप से नमन करता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, लोकतंत्र के इस सदन पर आतंकी हमला हुआ। पूरे विश्व में यह आतंकी हमला एक इमारत पर नहीं था, मदर ऑफ डेमोक्रेसी, एक प्रकार से हमारी जीवात्मा पर यह हमला था। यह देश उस घटना को कभी भूल नहीं सकता है, लेकिन आतंकियों से लड़ते-लड़ते सदन को बचाने के लिए और हर सदस्य को बचाने के लिए जिन्होंने अपने सीने पर गोलियां झेलीं, आज मैं उनको भी नमन करता हूं। वे हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उन्होंने बहुत बड़ी रक्षा की है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब आज हम इस सदन को छोड़ रहे हैं, तब मैं उन पत्रकार मित्रों को भी याद करना चाहता हूं जिन्होंने अपने जीवन में, कुछ लोग तो ऐसे हैं जिन्होंने अपने कार्यकाल में अपना पूरा जीवन संसद के काम को ही रिपोर्ट किया है। एक प्रकार से वे जीवन्त साक्षी रहे हैं। उन्होंने यहां की पल-पल की जानकारी देश तक पहुंचायी और तब तो यह सारी टेक्नोलॉजी उपलब्ध नहीं थी। तब वही लोग थे, जो यहां की बात पहुंचाते थे। उनका सामर्थ्य था कि वे अन्दर की भी पहुंचाते थे और अन्दर के अन्दर की भी पहुंचाते थे। मैंने देखा है कि ऐसे पत्रकार जिन्होंने संसद को कवर किया है, शायद उनके नाम जाने नहीं जाते, लेकिन उनके काम को कोई भूल नहीं सकता है। खबरों के लिए नहीं, भारत की इस विकास यात्रा को संसद भवन से समझने के लिए उन्होंने अपनी शक्ति खपा दी। आज भी पुराने जो पत्रकार मित्र मिल जाते हैं और जिन्होंने कभी संसद को कवर किया है, वे ऐसी अज्ञात चीजें बताते हैं, जो उन्होंने अपनी आंखों से देखी होती हैं, कान से सुनी होती हैं, जो अचरज करने वाली होती हैं। एक प्रकार से, जैसी ताकत यहां की दीवारों की रही हैं, वैसा ही दर्पण उनकी कलम में रहा है और उस कलम ने देश के अन्दर संसद के प्रति, संसद सदस्यों के प्रति एक अहोभाव का भाव जगाया है। कई पत्रकार बंधु होंगे, जो रहे नहीं होंगे, लेकिन जैसे मेरे लिए यह सदन छोड़ना एक भावुक पल है, मैं पक्का मानता हूं कि इन पत्रकार बंधुओं के लिए भी यह सदन छोड़ना उतना ही भावुक पल होगा, क्योंकि इनका लगाव हमसे भी ज्यादा रहा है। कुछ तो पत्रकार

ऐसे होंगे, जो हम लोगों के समय से पहले भी काम किए होंगे, आज उनके उस महत्वपूर्ण लोकतंत्र की ताकत बनने के लिए योगदान देने के लिए भी याद करने का अवसर है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, जब हम सदन के अन्दर आते हैं, हमारे यहां नाद ब्रह्म की कल्पना है। हमारे शास्त्रों में माना गया है कि किसी एक स्थान पर अनेक बार एक ही लय में उच्चारण होता है, वह तपोस्थली बन जाता है। उसके पॉज़िटिव वाइव्स होते हैं। नाद की एक ताकत होती है, जो स्थान को सिद्धि स्थान में परिवर्तित कर देती है। मैं मानता हूं कि यह सदन भी उस 7,000-7,500 जन प्रतिनिधियों के द्वारा बार-बार जो शब्द गूंजे हैं, जो वाणी यहां गूंजी है, उसमें इस सदन में हम बैठकर आगे चर्चा करें या न करें, लेकिन इसकी गूंज इसे तीर्थ क्षेत्र बना देती है। यह एक जाग्रत जगह बन जाती है और लोकतंत्र के प्रति श्रद्धा रखने वाला व्यक्ति आज से 50 साल के बाद भी जब यहां देखने के लिए आएगा तो उसे उस गूंज की अनुभूति होगी कि कभी भारत की आत्मा की आवाज़ यहां पर गूंजती थी।

माननीय अध्यक्ष जी, इसलिए यह वह सदन है, जहां कभी भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने अपनी वीरता और सामर्थ्य से अंग्रेज़ सल्तनत को बम का धमाका कर के जगा दिया था। उस बम की गूंज भी, जो देश का भला चाहते हैं, उनको कभी सोने नहीं देती है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह वह सदन है, जहां पंडित जी को इसलिए भी याद किया जाता है, अनेक बातों के लिए याद किया जाएगा, लेकिन हम जरूर याद करेंगे कि इसी सदन में पंडित नेहरू का 'At the stroke of midnight…' की गूँज हम सबको प्रेरित करती रहेगी। इसी सदन में अटल जी ने कहा था, वे शब्द आज भी इस सदन में गूँज रहे हैं कि 'सरकारें आएंगी, जाएंगी, पार्टियां बनेंगी, बिगड़ेंगी, लेकिन यह देश रहना चाहिए।'

आदरणीय अध्यक्ष जी, पंडित नेहरू की जो प्रारंभिक मंत्रिपरिषद थी, उसमें बाबा साहब अंबेडकर जी एक मंत्री के रूप में दुनिया की बेस्ट प्रेक्टिसिस भारत में लाने पर बहुत ज़ोर दिया करते थे। फैक्ट्री कानून में अंतर्राष्ट्रीय सुझावों को शामिल करने पर बाबा साहब सर्वाधिक आग्रही रहे थे। उसका परिणाम है कि आज देश को लाभ मिल रहा है। बाबा साहब अंबेडकर ने देश को नेहरू जी की

सरकार में वॉटर पॉलिसी दी थी और उस वॉटर पॉलिसी को बनाने में बाबा साहब अंबेडकर की बहुत बड़ी भूमिका रही थी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम यह जानते हैं कि भारत में, बाबा साहब अंबेडकर एक बात हमेशा कहते थे कि भारत में सामाजिक न्याय के लिए भारत का औद्योगीकरण होना बहुत जरूरी है, क्योंकि देश के दलितों और पिछड़ों के पास जमीन ही नहीं है तो वे क्या करेंगे। इसके लिए औद्योगीकरण होना चाहिए। बाबा साहब की इस बात को मान कर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, जो पंडित नेहरू की सरकार में मंत्री थे और इस देश के पहले वाणिज्य और उद्योग मंत्री के रूप में उन्होंने इंडस्ट्री पॉलिसीज़ इस देश में बनाई थीं। आज भी कितनी ही इंडस्ट्री पॉलिसीज़ बनें, लेकिन उसकी आत्मा वही होती है, जो पहली सरकार की थी और उनका भी बहुत बड़ा अहम योगदान रहा था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, लाल बहादुर शास्त्री जी ने 65 के युद्ध में हमारे देश के जवानों का हौंसला बुलंद करना, उनके सामर्थ्य को पूरी तरह राष्ट्रहित में झोंक देने की प्रेरणा इसी सदन में से दी थी और यहीं पर ग्रीन रेवल्युशन के लिए मज़बूत नींव लाल बहादुर शास्त्री जी ने रखी थी।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बांग्लादेश की मुक्ति का आंदोलन और उसका समर्थन भी इसी सदन ने इंदिरा गांधी के नेतृत्व में किया था। इसी सदन ने इमरजेंसी में लोकतंत्र पर होता हुआ हमला भी देखा था। इसी सदन ने भारत के लोगों की ताकत को अहसास कराते हुए, मज़बूत लोकतंत्र की वापसी भी इसी सदन ने देखी थी। वह राष्ट्रीय संकल्प भी देखा था, सामर्थ्य भी देखा था।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह सदन इस बात का हमेशा ऋणी भी रहेगा, क्योंकि इसी सदन में हमारे पूर्व प्रधान मंत्री चरण सिंह जी ने ग्रामीण विकास मंत्रालय का गठन किया था। इसी सदन में मतदान की उम्र 21 वर्ष से घटा कर 18 वर्ष करने का निर्णय हुआ था और देश की युवा पीढ़ी को मतदान का योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया, उत्साहित किया गया था।

12.00 hrs

हमारे देश ने गठबंधन की सरकारें देखी हैं। वी.पी. सिंह जी हो, चंद्रशेखर जी हो और बाद में एक सिलसिला चला और लंबे अरसे से देश एक दिशा में जा रहा था। आर्थिक नीतियों के बोझ तले

देश दबा हुआ था, लेकिन नरसिम्हा राव की सरकार थी, जिन्होंने हिम्मत के साथ पुरानी आर्थिक नीतियों को छोड़कर नई राह पकड़ने का फैसला किया था, जिसका परिणाम आज देश को मिल रहा है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में सरकार भी हमने इसी सदन में देखी। सर्व शिक्षा अभियान आज देश में महत्वपूर्ण बन गया है। अटल जी ने आदिवासी कार्य मंत्रालय बनाया। नॉर्थ-ईस्ट का मंत्रालय अटल जी ने बनाया। न्यूक्लियर टेस्ट भारत के सामर्थ्य का परिचायक बन गया। इसी सदन में मनमोहन जी की सरकार के समय 'कैश फॉर वोट' कांड को भी सदन ने देखा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 'सबका साथ - सबका विकास' का मंत्र, अनेक ऐतिहासिक निर्णय, दशकों से लंबित विषयों का स्थायी समाधान भी इसी सदन में हुआ। आर्टिकल 370 - यह सदन हमेशा-हमेशा गर्व के साथ कहेगा कि यह भी इसी सदन में हुआ। 'वन नेशन वन टैक्स', जीएसटी का निर्णय भी इसी सदन में किया गया। वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी), यह भी इसी सदन ने देखा। गरीबों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण, किसी विवाद के बिना पहली बार इस देश में करने में सफलता मिली।

आदरणीय अध्यक्ष जी, भारत के लोकतंत्र में तमाम उतार-चढ़ाव हमने देखे हैं। यह सदन लोकतंत्र की ताकत है, लोकतंत्र की ताकत की साक्षी है, जन विश्वास का एक केंद्र बिंदू रहा है। इस सदन की विशेषता देखिए और दुनिया के लोगों को आज भी आश्चर्य होता है, यही सदन है, जिसमें कभी चार सांसद वाली पार्टी सत्ता में होती थी और 100 सदस्यों वाली पार्टी विपक्ष में बैठती थी। यह भी सामर्थ्य है और इस सदन की लोकतंत्र का परिचय कराता है। यही सदन है, जिसमें एक वोट से अटल जी की सरकार गई थी और लोकतंत्र की गरिमा को बढ़ाया था। यह भी इसी सदन में हुआ था।

आज अनेक छोटी-छोटी रीजनल पार्टियों का प्रतिनिधित्व हमारे देश की विविधता को, हमारे देश के एस्पिरेशंस का एक प्रकार से आकर्षक केंद्र बिंदू बना है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस देश में दो प्रधानमंत्री ऐसे रहे हैं, मोरारजी भाई और वी.पी. सिंह जी, एक प्रकार से उन्होंने कांग्रेस में जीवन खपाया था, लेकिन वे एंटी कांग्रेस गवर्नमेंट का नेतृत्व कर

रहे थे। यह भी इसकी विशेषता थी। हमारे नरसिम्हा राव जी, वह तो बिस्तरा गोल करके घर जाने की तैयारी कर रहे थे, निवृत्ति की घोषणा कर चुके थे, लेकिन इसी लोकतंत्र की ताकत देखिए, इस सदन की ताकत देखिए कि उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में पाँच साल हमारी सेवा की।

आदरणीय अध्यक्ष जी, सबकी सहमति से कठिन से कठिन कार्य होते हुए हमने देखे हैं। वर्ष 2000 का साल था, अटल जी की सरकार थी। इसी सदन ने तीन राज्यों का गठन सर्व स्वीकृति से किया और बड़े उमंग-उत्साह से किया। जब छतीसगढ़ की रचना हुई तो उत्सव छतीसगढ़ ने भी मनाया, उत्सव मध्य प्रदेश ने भी मनाया। जब उत्तराखंड की रचना हुई तो उत्सव उत्तराखंड ने भी मनाया, उत्सव उतर प्रदेश ने भी मनाया। जब झारखंड की रचना हुई तो उत्सव झारखंड ने भी मनाया, उत्सव बिहार ने भी मनाया। यह हमारे सदन का सामर्थ्य है। सब सहमति का वातावरण बनाकर किया गया, लेकिन कुछ कड़वी यादें वह भी हैं कि तेलंगाना के हक को दबोचने के लिए भारी प्रयास हुए।

खून की नदियां भी बहीं और बनने के बाद न तेलंगाना उत्सव मना पाया, न आंध्र उत्सव मना पाया। एक कटुता के बीज बो दिए गए। अच्छा होता, उसी उमंग और उत्साह के साथ हम तेलंगाना का निर्माण करते तो एक नई ऊंचाई पर आज तेलंगाना पहुंच चुका होता। ... (व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस सदन की परंपरा रही है, संविधान सभा ने उस समय अपना दैनिक भत्ता 45 रुपये से कम करके 40 रुपये कर दिया था। उनको लगा, हमें इसको कम करना चाहिए। आदरणीय अध्यक्ष जी, यही सदन है, कैन्टीन में मिलने वाली सब्सिडी, जो बहुत कम पैसे में खाना मिलता था, इन्हीं सदस्यों ने उस सब्सिडी को भी खत्म कर दिया और पूरा पैसा देकर अब कैन्टीन में खाना खाते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कोरोना काल में जब जरूरत पड़ी तो यही सांसद, जिन्होंने एमपीलैड फंड को छोड़ दिया और देश को इस संकट की घड़ी में मदद करने के लिए आगे आए। ...(व्यवधान) इतना ही नहीं, कोरोना काल में इसी सदन के सांसदों ने अपनी तनख्वाह में तीस प्रतिशत कटौती की और उन्होंने देश के सामने आए हुए संकट में अपनी बहुत बड़ी जिम्मेवारी निभाई।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम गर्व से कह सकते हैं, यह सदन में बैठे हुए लोग भी कह सकते हैं, हमारे पूर्व जो सदन में बैठे थे, वे भी कह सकते हैं कि हम ही लोग हैं, जिन्होंने हम पर डिसिप्लिन लाने के लिए हमारे यहां जनप्रतिनिधित्व कानून में समय-समय पर कठोरता बरती। नियम हमने ही बांधे। हमने ही तय किया कि नहीं, जनप्रतिनिधि के जीवन में यह नहीं हो सकता। मैं मानता हूं, यह जीवन्त लोकतन्त्र का बहुत बड़ा उदाहरण है और यह सदन ने दिया है। यही माननीय सांसदों ने दिया है और पुरानी पीढ़ी के सांसदों ने दिया है। मैं मानता हूं कि कभी-कभी उन चीजों को भी याद करना चाहिए।

आदरणीय अध्यक्ष जी, हम जो वर्तमान सांसद हैं, उनके लिए तो यह विशेष सौभाग्य का अवसर है। सौभाग्य का अवसर इसलिए है कि हमें इतिहास और भविष्य दोनों की कड़ी बनने का अवसर मिल रहा है। कल और आज से जुड़ने का हमें अवसर मिल रहा है और आने वाले कल निर्माण करने का एक नया विश्वास, नई उमंग, नये उत्साह के साथ हम यहां से विदाई लेने वाले हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, आज का दिवस सिर्फ और सिर्फ इस सदन के सभी, साढ़े सात हजार जनप्रतिनिधि रह चुके हैं, उनके गौरवगान का पल है। इन दीवारों से जो हमने प्रेरणा पाई है, जो नया विश्वास पाया है, उसको लेकर जाने का है। बहुत सी बातें ऐसी थीं, जो सदन में हर किसी की ताली की हकदार थीं। लेकिन, शायद राजनीति उसमें भी आड़े आ रही है। नेहरू जी के योगदान का गौरवगान अगर इस सदन में होता है, कौन सदस्य होगा जिसका ताली बजाने का मन न करे। …(व्यवधान) लेकिन उसके बावजूद भी देश के लोकतंत्र के लिए बहुत जरूरी है। …(व्यवधान) हम सब अपने यहां सोच लें।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मुझे पूरा विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में और इन अनुभवी माननीय सांसदों के सामर्थ्य से हम नई संसद में जब जाएंगे तो नये विश्वास के साथ जाएंगे। मैं फिर एक बार, आज पूरा दिवस आपने इन पुरानी स्मृतियों को ताजा करने के लिए दिया, एक अच्छे वातावरण में सबको याद करने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं और मैं सभी सदस्यों से आग्रह करूंगा कि अपने जीवन की ऐसी मधुर यादों को यहां हम जरूर व्यक्त करें, ताकि देश

तक पहुंचे कि सचमुच में यह हमारा सदन, हमारे जनप्रतिनिधियों की गतिविधि सच्चे अर्थ में देश को समर्पित है।

इसका भाव लोगों तक पहुंचे, इसी अपेक्षा के साथ मैं एक बार फिर इस धरती को प्रणाम करता हूं, इस सदन को प्रणाम करता हूं। भारत के मंदिरों से बनी हुई हरेक दीवार की एक-एक ईंट को प्रणाम करता हूं। पिछले 75 साल में भारत के लोकतंत्र को नया साम्थर्य शक्ति देने वाली हर गूंज को, उस नादब्रह्म को नमन करते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, माननीय प्रधानमंत्री जी ने इस सदन की सीख, सदन के अनुभव, यहां की प्रेरणा, यहां की गूंज के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। मैं आपसे अपेक्षा करूंगा कि आज के दिन आप सब इसी तरीके से सकारात्मक वातावरण में चर्चा करें, सकारात्मक विषय रखें। यहां से जो कुछ भी सीखा है, हमारे पूर्वजों ने जो कुछ भी इस देश और लोकतंत्र को दिया है, उसके बारे में सकारात्मक विचार रखें। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

… (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: श्री अधीर रंजन चौधरी जी।

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY (BAHARAMPUR): Sir, I must appreciate your endeavour for offering this opportunity to ventilate our views on the *Samvidhan Diwas*. लेकिन बात यह है, अमृत काल का 75 साल कहा जा रहा है। मेरी जानकारी के अनुसार सबसे पहले कन्सटीट्यूशन असेम्बली की जो सभा हुई थी, वह वर्ष 1946 में हुई थी और 26 नवम्बर, 1949 में संविधान एडॉप्ट हुआ था। 26 जनवरी, 1950 को इस देश में संविधान लागू हुआ था। लेकिन कहां से 75 साल का अमृतकाल लाया गया, यह मुझे समझ में नहीं आता है।

आज जब इस सदन का अंतिम दिवस है तो सही मायनों में भावुक होना स्वाभाविक है। कितने सारे विद्वानजनों, ज्ञानियों, पंडितों और देशी प्रेमियों ने इस सदन के साथ-साथ हमारे संविधान और देश के लोकतंत्र की रक्षा करने के लिए न जाने कितने योगदान दिए होंगे। आज बहुत सारे पूर्वज इस दुनिया को छोड़ कर चले गए, हम उनको याद करते रहेंगे। जिन्दगी में सदन जरूर कहेगी कि